जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जिसमें आत्मरुचि, आत्म-ज्ञान और आत्मलीनतारूप धर्म पर्याय प्रकट होती है, उसमें धर्म के दशलक्षण सहज प्रकट हो जाते हैं।

- धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-7

वर्ष : 26, अंक : 11
सितम्बर (प्रथम) 2003

सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्रबन्ध सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

विद्वत्परिषद् के नए अध्यक्ष : डॉ. भारिल्ल

जयपुर। 15 अगस्त, 03 को श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् की कार्य समिति की बैठक वयोवृद्ध विद्वान पं. अनूपचन्दजी न्यायतीर्थ, जयपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में पूर्व अध्यक्ष पं. प्रकाशचन्दजी 'हितैषी' के निधन पर शोक व्यक्त किया गया तथा उनके निधन से रिक्त हुए अध्यक्ष पद पर सर्व सम्मति से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का चयन किया गया। बैठक में डॉ. सुदर्शनलाल जैनह्नवाराणसी को कार्याध्यक्ष, पं. विमलकुमारजी सोंरयाह्नटीकमगढ़ को उपाध्यक्ष तथा विशिष्ट आमंत्रित सदस्य के रूप में सर्वश्री डॉ. शशिकान्त जैनह्नलखनऊ, वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्द डण्डियाह्नजयपुर तथा पं. मनोहर मारवडकरह्ननागपुर को मनोनीत किया गया। कार्यकारिणी में नए सदस्य के रूप में डॉ. ऋषभ फौजदार वैशाली को सम्मिलित किया गया।

श्रावकाचार संगोष्ठी सम्पन्न

जयपुर। सिद्धान्त चक्रवर्ती पूज्य आ. श्री विद्यानन्दजी की प्रेरणा से स्थानीय सिद्धार्थनगर में चारित्र च. आचार्य श्री शान्तिसागरजी की 131वीं जन्मजयन्ती समारोह संयमवर्ष के अन्तर्गत मुनि श्री उर्जयन्त सागरजी के पावन सान्निध्य में दि. 14 से 17 अगस्त तक चार दिवसीय श्रावकाचार संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देश के लगभग 30 प्रतिष्ठित विद्वानों ने भाग लिया। वक्ताओं ने श्रावकाचार संगोष्ठी के अतिरिक्त आचार्य श्री शान्तिसागरजी के जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को भी उजागर किया।

संगोष्ठी का शुभारंभ राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक श्री हरिसिंह महवा द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता जैन दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। समारोह के मुख्य अतिथि श्री एन.के. सेठी तथा विशिष्ट अतिथि दि. जैन महासमिति के कार्याध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार पाटनी थे। भाग लेने वाले विद्वानों में सर्वश्री डॉ. प्रेमसुमनह्नउदयपुर, डॉ. उदयचंद जैनह्नउदयपुर, डॉ. अभयप्रकाश जैनह्नग्वालियर, पं. रतनचन्द भारिल्लह्नजयपुर, डॉ. शीतलचन्द जैनह्नजयपुर, डॉ. राजेन्द्र बंसलह्नअमलाई, डॉ. कमलेश जैनह्नदिल्ली, अनूपचंद एडवोकेटह्नफिरोजाबाद, डॉ. एस.पी. पाटिलह्नधारवाड़, डॉ. सत्यप्रकाश जैनह्नदिल्ली, डॉ. वीरसागर जैनह्नदिल्ली, डॉ. अशोक शास्त्रीह्नदिल्ली आदि प्रमुख थे। **ह्न अखिल बंसल,** *संयोजक*

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा आयोजित

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में

छठवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(गुरुवार, 2 अक्टूबर से शनिवार, 11 अक्टूबर, 2003 तक)

आपको सूचित करते हुये हर्ष हो रहा है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर में गुरुवार, दिनांक 2 अक्टूबर से शनिवार, 11 अक्टूबर, 2003 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक विशिष्ट मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

शिविर में देश के ख्यातिप्राप्त अनेक विशिष्ट विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से धर्मलाभ मिलेगा। साथ ही व्याख्यानमाला के माध्यम से अन्य अनेक विद्वानों द्वारा विविध विषयों के व्याख्यानों का भी लाभ प्राप्त होगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

सभी साधर्मी बन्धुओं को ऐसे मांगलिक अवसर पर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा

36

– रतनचन्द भारिल्ल

वैजयन्त नाम के एक राजा थे। उनकी रानी का नाम सर्वश्री था। इनसे संजयन्त और जयन्त नामक पुण्यवान और पवित्रता के पुंज दो पुत्र हुए। एक समय विहार करते हुए वहाँ स्वयंभू तीर्थंकर का समवशरण आया। उनसे धर्मश्रवण कर पिता वैजयन्त एवं संजयन्त और जयन्त दोनों पुत्रों ने भी दीक्षा धारण कर ली। वे तीनों अपने गुरु आचार्य पिहिताश्रव के साथ विहार करते थे। एक दिन वैजयन्त मुनिराज को केवलज्ञान हो गया। उनके केवलज्ञान कल्याणक के उत्सव में जब चारों निकाय के देव भगवान वैजयन्त की वन्दना कर रहे थे तभी धरणेन्द्र की भक्तिभावना को देख जयन्त मुनि ने धरणेन्द्र होने का निदान किया और वे अपने निदानबंध के अनुसार धरणेन्द्र हो गये।

किसी समय जयन्त मुनि के बड़े भाई संजयन्त मुनि श्मशान में सात दिन का प्रतिमायोग लेकर ध्यानस्थ थे। संयोग से विद्युंद्रष्ट कहीं से लौटकर वहाँ से निकला तो उसकी दृष्टि तद्भव मोक्षमार्गी संजयन्त मुनि पर पड़ी। पूर्व वैर के कारण कुपित होकर वह उन्हें वहाँ से उठा लाया और भरतक्षेत्र के उस पर्वत पर ले गया, जहाँ पाँच नदियों का संगम था। तथा किसी तरह अपने अधीनस्थ विद्याधरों को संजयन्त मुनि के विरुद्ध भड़का कर मुनि हत्या के लिए प्रेरित किया, जिससे उन्होंने मुनि संजयन्त को मार डालने का प्रयत्न किया; किन्तु वे तो चरमशरीरी थे, उन्हें कौन मार सकता था। उनको तो केवलज्ञान प्राप्त करने एवं मुक्त होने का समय आ गया था, अतः वे तो जीवन के अन्तिम समय में स्वरूप मग्नरूप ध्यानस्थ हो केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो गये।

केवली संजयन्त के निर्वाण होने पर उनके निर्वाणोत्सव एवं पूजा के लिए इन्द्र एवं देव आये। जयन्त का जीव जो निदानवश धरणेन्द्र हुआ था, वह भी आया और वैरी विद्युंद्रष्ट को देख जान से मार डालने को तैयार हुआ ही था कि उसी समय लान्तव इन्द्र ने आकर रोका और कहा ह्न ''हे धरणेन्द्र ! मैं तुम्हें अपने आपस में उत्पन्न हुए वैर के बारे में बताता हूँ; तुम ध्यान से सुनो! मैं (लान्तव इन्द्र), तुम (धरणेन्द्र), विद्युंद्रष्ट और संजयन्त ह्न हम चारों वैर बांधकर संसार में अब तक भटकते रहे हैं; अब सौभाग्य से हम चारों ही जिनागम के शरण में आ गये हैं। संजयन्त तो मुनि होकर केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो ही गया है। मुझे और तुम्हें भी पुण्योदय से स्वर्ग प्राप्त है। यद्यपि हम देवगति में संयम धारण नहीं कर सकते; फिर भी *जिनागम के वस्तुस्वरूप का अवलम्बन लेकर पुण्य–पाप की विचित्रता जानकर और राग–द्वेष के कारण उत्पन्न ये संसार बढ़ाने वाले वैर–विरोध का त्यागकर संक्लेश भावों से तो बच ही सकते हैं। अन्यथा अति संक्लेश भावों में मरकर भयंकर नरकरूप संसार सागर में जाने से हम बच नहीं पायेंगे।*''

अपने वैर–विरोध के कारणों का उल्लेख करते हुए लान्तव इन्द्र ने आगे कहा ह्न ''देखो मैं तुम्हे एक कथा द्वारा वैर के दुष्परिणाम बताता हूँ, संभवतः उसे सुनकर तुम स्वयं वैर–विरोध करना छोड़ दोगे।

जब राजा सिंहसेन को यह ज्ञात हुआ कि ह्न सुमित्तदत्त सेठ के रत्न श्रीभूति पिरोहित ने बेईमानी से वापिस नहीं करने चाहे तो राजा ने उसके लिए तीन वैकल्पिक दण्ड निर्धारित किए ''1. रत्न वापिस लौटाओ 2. गोबर खाओ अथवा 3. मल्ल से तीन मुक्के खाओ'' और उसे एक–एक करके तीनों दण्ड भोगने पड़े। क्योंकि पहले उसने गोबर खाना प्रारंभ किया, पर वह पूरा गोबर न खा सका तो वह मुक्का खाने को तैयार हुआ; पर एक ही मुक्के में घबरा गया तो अन्त में रत्न लौटाकर जैसे–तैसे अपने प्राण बचाये। संक्लेश परिणामों से मरकर कुगति हुई सो अलग। राजा सिंहसेन ने श्रीभूति पिरोहित को इस जन्म में दण्ड देकर थोड़ा–सा अनिष्ट किया था; परन्तु उस छोटी–सी घटना से बैर बांधकर श्रीभूति पिरोहित के जीव ने सिंहसेन का अनेक बार घात किया अवश्य; परन्तु उससे उसे लाभ क्या हुआ? प्रत्युत उसके ये वैरभाव से किए कार्य उसके ही सुख के घातक सिद्ध हुए।

सेठ सुमित्तदत्त के रत्न वापिस कराने में रामदत्ता रानी को ही सर्वाधिक श्रेय होने से सेठ ने उसकी कोंख से पुत्र होने का निदान किया ह्न सुमित्र सेठ धर्मात्मा तो था ही, अतः उसके निदान से वह रामदत्ता रानी की कोंख से ही राजपुत्र हुआ, जिसका नाम सिंहचन्द्र रखा गया। इसका एक छोटा भाई पूर्ण चन्द्र भी था। सुमित्र सेठ की पत्नी का पति से पूर्व वैचारिक मतभेद होने से दोनों में प्रेम पल्लवित्त नहीं हो पाया, खेंचातानी ही रही। इसकारण वह मरकर व्याघ्री हुई, सेठानी ने बदले की भावना से व्याघ्री बनकर अपने पति को ही खाया।

(क्रमशः)

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

20

भूत-भविष्य की पर्यायें अभी विद्यमान नहीं हैं इसलिये वर्तमान पर्याय की अपेक्षा से तो वे अविद्यमान ही है; परन्तु ज्ञान ने उन्हें वर्तमानवत् प्रत्यक्ष किया इसलिये भूतार्थ कहा है, तो यह भगवान आत्मा तो वर्तमान भूतार्थ है, सकल निरावरण अखंड एकरूप प्रत्यक्ष प्रतिभासमय वर्तमान में भूतार्थ है, तो वह भगवान आत्मा वर्तमान में प्रत्यक्ष क्यों नहीं होगा ? वर्तमान में है और उसका स्वभाव प्रत्यक्ष होने का है तो वह वर्तमान में ज्ञान में प्रत्यक्ष क्यों नहीं होगा ? अवश्य होगा ही; परन्तु उसकी महिमा नहीं लाता, उसे दृष्टि में नहीं लेता, उसके इतने महान अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता।

जिस परमाणु की पर्याय जिस काल जिस क्षेत्र में उसके जन्म-क्षण में षट्कारक से परिणमती है उसे कौन करेगा और कौन बदलेगा ? इसीप्रकार प्रत्येक द्रव्य का स्वतंत्र परिणमन है। वास्तव में तो स्वद्रव्य परद्रव्य का स्पर्श ही नहीं करता। आत्मा शरीर को छूता ही नहीं है, हाथ-पैर को नहीं हिलाता। शरीर भी जमीन का स्पर्श नहीं करता। ऐसी वस्तु की स्वतंत्रता है। ऐसी स्वतंत्रता की हाँ कहने से उसकी लत लगती है और वैसी हालत हो जाती है।

निमित्त तुझमें नहीं है, विकार भी तुझमे नहीं है; परन्तु निर्मल पर्याय भी तेरी ध्रुववस्तु में नहीं है – इसप्रकार दृष्टि को अव्यक्त पर ले जाना है। बात सूक्ष्म है; परन्तु इसे समझने में ही उद्धार है, अन्य सब व्यर्थ है। बाह्य वस्तु तो तुझमें है ही नहीं; स्त्री-पुत्र तो उनके अपने कारण आये हैं, वे तुझमें नहीं हैं और तेरे कारण आये नहीं हैं, परन्तु दया-दानादि या हिंसा-असत्य आदि भी तेरी वस्तु में नहीं है; परन्तु यहाँ तो ऐसा कहते हैं कि जो निर्मल पर्याय है वह क्षणिक है, वह भी तुझमें नहीं है, इसलिये क्षणिक पर्याय पर दृष्टि न कर, परन्तु जहाँ ध्रुवतत्त्व विराजमान है वहाँ दृष्टि कर। सुखी होने का यह एक ही मार्ग है।

जबतक आत्मा का ज्ञान नहीं है तबतक जीव रागादि के साथ व्याप्य-व्यापकरूप से परिणमता है अर्थात् तबतक अज्ञानी जीव कर्ता और रागादि कार्य इसप्रकार परिणमन करता है। ज्ञानी राग का किंचित् भी कर्ता नहीं है, परन्तु जबतक अज्ञानी को आत्मा की खबर नहीं है और पुद्गल कर्म विकार का कर्ता जीव द्रव्य है। जीव द्रव्य अर्थात् ? त्रिकालिक द्रव्य तो शुद्ध चिद्घन आनन्दकन्द ही है; वह विकारी या अविकारी पर्याय का कर्ता नहीं है, इसलिये यहाँ जीवद्रव्य का अर्थ उस समय की जीव की पर्याय का कर्ता है; क्योंकि पर्याय के कारकों से पर्याय ही कर्ता और पर्याय ही कर्म है।

एक समय की पर्याय सत् है, स्वतंत्र है, जिस काल जो पर्याय होना है, वह पर्याय अपने षट्कारक की क्रिया से स्वतंत्र होगी; परन्तु उसका निर्णय कैसे हो? उस निर्णय का तात्पर्य क्या है ? तो कहते हैं कि वीतरागता ही तात्पर्य है। यह वीतरागता कब होती है ?

एक समय की पर्याय जब कर्तृत्वबुद्धि के लक्ष से तथा पर्याय को परिवर्तित करने की बुद्धि से हटकर त्रैकालिक ध्रुव ज्ञायक पर जाये तब निस्सन्देह निर्णय होने पर परिणामों में अंशत: निर्मलता एवं वीतरागता होती है। यही सच्चे निर्णय का फल और तात्पर्य है। अहाहा ! क्या बात है वीतराग वाणी की ! चारों ओर से एक सत् ही उपस्थित होता है।

पर्यायबुद्धि छोड़कर ज्ञायक की प्रतीति करना ही क्रमबद्ध का फल है।

प्रश्न : आत्मा की महिमा कैसे आये ?

उत्तर : आत्मवस्तु ज्ञानस्वरूप है, ज्ञायक है, वह अनन्त गुणों का पिण्ड है, वह पूर्णतत्त्व त्रैकालिक अस्तिरूप है, उसका स्वरूप, उसका सामर्थ्य अगाध एवं आश्चर्यकारी है, उसे समझे तो आत्मा की महिमा ख्याल में आये और राग का माहात्म्य छूट जाये। आत्मवस्तु अस्तित्ववान है, सामर्थ्यवान है, उसका स्वरूप रुचिपूर्वक ध्यान में लेवे तो उसका माहात्म्य और राग का तथा अल्पज्ञता का माहात्म्य छूट जाता है। एक समय की केवलज्ञान पर्याय तीनकाल और तीनलोक के समस्त पदार्थों और उनकी समस्त पर्यायों को जानने की सामर्थ्यवाली है। वह भी प्रतिक्षण नई-नई उत्पन्न होती है। तो फिर उसे धारण करनेवाले त्रैकालिक द्रव्य की सामर्थ्य शक्ति कितनी होगी ? इसप्रकार आत्मा के आश्चर्यकारी स्वभाव को प्रतीति में लेवे तो आत्मा की महिमा समझ में आती है।

अहाहा ! स्वयं ही सर्वज्ञस्वरूप है, परिपूर्णस्वरूप से भरा हुआ स्वयं ही सर्वज्ञस्वभावी है। ज्ञान, आनन्द आदि अनन्त रत्नों से भरा हुआ रत्नाकर भगवान आत्मा स्वयं ही है, उसे अपूर्ण-अल्पज्ञ पर्यायवाला मानना यह अज्ञान और मिथ्याभ्रम है। तब जो राग को अपना माने वह तो मिथ्यादृष्टि ही है।

प्रभु ! सुन तो सही ! अपनी प्रभुता को देख ! व्यवहार के शुभराग की पर्याय तो रह गई, परन्तु वीतराग-निर्मलदशारूप मुनिपर्याय का भी जिसमें अभाव है – ऐसी तेरी ज्ञायक प्रभुता है। निर्मल पर्याय भी व्यवहारनय का विषय है और समस्त पर्याय से रहित ध्रुव ज्ञायक तत्त्व निश्चय नय का विषय है। अहाहा ! आत्मा मुनि है या केवलज्ञानी है ? ह्न ऐसी पर्यायदशा भी ध्रुव ज्ञायक द्रव्य में नहीं है। केवलज्ञान भी पूर्ण निर्मल पर्याय है। ज्ञान की पूर्ण विकसित पर्यायवाला भी आत्मा नहीं है। वह पर्याय ध्रुव द्रव्यरूप नहीं है। आत्मा तो ध्रुव गुण स्वरूप सहज ज्ञान की मूर्ति है। गजब की बात है ! यह जैनदर्शन तो वस्तु स्वतंत्रता का दर्शन है।

रविवारीय गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर :** श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रांगण में रविवार, दिनांक 10 अगस्त, 03 को श्री मोहनलालजी सेठी की अध्यक्षता में **पूजन : एक अनुशीलन** विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान रवीन्द्र काले एवं द्वितीय स्थान राहुल जैन, अलवर ने प्राप्त किया। गोष्ठी का संचालन प्रशांत जैन, मौ एवं संयोजन नीरज जैन खड़ैरी ने किया।

2. **जयपुर :** रविवार, 17 अगस्त, 03 को पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री की अध्यक्षता में **दशलक्षण : एक चिन्तन** विषय (प्रारंभिक 5 धर्म)पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम स्थान निखिल जैन बण्डा ने तथा द्वितीय स्थान आदित्य जैन एवं अंकुर जैन ने प्राप्त किया। गोष्ठी का संचालन अभिषेक जैन रहली तथा संयोजन सौरभ जैन शाहगढ़ ने किया।

3. **जयपुर :** इसी शृंखला में रविवार, 24 अगस्त 03 को **दशलक्षण : एक चिंतन** विषय (शेष 5 धर्मों) पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री दि. जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के प्रवक्ता डॉ. सनतकुमारजी जैन ने की। अन्त में श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रथम पुरस्कार विजय बोरालकर एवं द्वितीय पुरस्कार अभिनंदन पाटील को दिया गया। संचालन अतुल देवड़ीया एवं संयोजन विकास कंधारकर ने किया।

शिक्षण-शिविर का आयोजन

कारंजा(लाड)(महा.): श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरूकल में महावीर ज्ञानोपासना समिति द्वारा दिनांक 1 अगस्त से 10 अगस्त, 2003 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें पण्डित धन्यकुमारजी भोरे के प्रवचनसार पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

साथ ही पण्डित देवेन्द्रकुमारजी नीमच, पण्डित तेजमलजी गंगवाल इन्दौर, विदुषी विजयाताई भिसीकर एवं पण्डित महेन्द्रकुमारजी नांदगावकर आदि विद्वानों के भी सारगर्भित प्रवचन हुए। जिसका सम्पूर्ण समाज ने लाभ लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन सेठ श्री रेणुकादासजी दोडल, हिंगोली द्वारा किया गया।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

उदयपुर(आदर्शनगर): यहाँ नवनिर्मित श्री चन्द्रप्रभ दि. जिनालय में दिनांक 24 एवं 25 जुलाई, 2003 को वेदीप्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री चन्दनलालजी दोशी द्वारा यागमण्डल विधान तथा श्री भंवरलालजी कुन्दनलालजी कोठारी द्वारा वेदी शुद्धि की गई।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर के सहयोग से सम्पन्न कराये गये। रात्रि में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित हेमन्तजी शास्त्री द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री भागचन्दजी कालिका द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

बाल संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

मक्सी (शाजापुर-म.प्र.) : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल मक्सी में दिनांक 26 जुलाई से 2 अगस्त 2003 तक कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन द्वारा सात दिवसीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का ध्वजारोहण श्री आर. के. जैन तथा उद्घाटन श्री ए.के. सिंघई द्वारा किया गया।

इस अवसर पर पण्डित जगदीशजी वकील सा0, उज्जैन द्वारा बालकक्षायें ली गई तथा पण्डित महेशकुमारजी जैन एवं पण्डित दिनेशकुमारजी जैन द्वारा बालबोध पाठमाला की कक्षायें ली गई।

– दिनेश जैन

तीर्थधाम मंगलायतन : पंचकल्याणक से आजतक

मंगलायतन : तीर्थधाम मंगलायतन के पंचकल्याणक (दिनांक 31जनवरी से 06 फरवरी 2003) के पश्चात् विगत 06 माह में यहाँ सम्पन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है ह्न

मार्च – अष्टाह्निका पर्व के अवसरपर दिनांक 11 से 18 मार्च 03 तक श्री पंचपरमेष्ठी विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन पण्डित अजितकुमारजी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

अप्रैल – 15 अप्रैल से 25 अप्रैल, 03 तक भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन की 11वीं कक्षा में प्रवेशेच्छुक छात्रों के साक्षात्कार के लिये जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

मई – पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्मजयन्ती के अवसर पर 1 से 8 मई, 03 तक श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन की नवमी कक्षा में प्रवेशेच्छुक छात्रों के साक्षात्कार के लिये जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया ।

ज्ञातव्य है की दोनों ही शिविरों के अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री, नागपुर का सानिध्य प्राप्त हुआ।

जून – भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन के चयनित छात्रों को पूज्य गुरुदेवश्री की साधनाभूमि का परिचय कराने के उद्देश्य से 18 जून से 29 जून, 03 तक साधनाभूमि दर्शनयात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं पण्डित अशोक लुहाड़िया अलीगढ़ के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई।

जुलाई – आषाढ़ की अष्टाह्निका में 06 से 13 जुलाई, 03 तक श्री पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। 06 जुलाई को नवनिर्मित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन भवन एवं भोजनशाला का उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

पर्यूषण पर्व के अवसर पर कौन - कहाँ ?

विगत अंक में 8 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार पर्यूषण पर्व के अवसर पर जानेवालें 406 विद्वानों की सूची प्रकाशित की गई थी। उसके पश्चात् दिनांक 28 अगस्त तक नवीन आमंत्रणप्राप्त स्थानों पर निश्चित किये गये विद्वानों की सूची यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश प्रान्त में – 407. **भोपाल (पिपलानी) :** पं. कस्तूरचन्दजी जैन विदिशा, 408. **भोपाल (पंचशील नगर) :** पं. शिखरचन्दजी जैन विदिशा, 409. **भोपाल :** पं. योगेशजी शास्त्री बरा, 410. **धार :** पं. प्रदीपजी शास्त्री दमोह, 411. **गढ़ाकोटा :** पं. बाबूलालजी पल्लीवाल गुना, 412. **करेली :** पं. सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, 413. **खैरागढ़ :** पं. अभयजी शास्त्री, 414. **सागर (गौरमूर्ति) :** पं. पवनजी जैन मौ, 415. **सनावद :** पं. विजयजी यादव, 416. **बाबई :** पं. कमलेशजी जैन, 417. **मगरोन :** पं. दीपकजी जबेरा, 418. **टीकमगढ़ :** पं. सुनीलजी बेलोकर, 419. **रांझी :** पं. नन्हेलालजी जैन मोकलपुर, 420. **खुरई :** पं. निर्मलजी जैन सागर, 421. **आरोन :** पं. अमितजी जबेरा, 422. **बण्डा :** पं. आदित्य जैन खुरई, 423. **कर्रापुर :** पं. जितेन्द्र यादव, 424. **अंबाह :** पं. रमेशजी मोदी सागर, 425. **अमरकोट :** पं. राजेश जैन शिवपुरी, 426. **इन्दौर (देवास रोड) :** पं. सुदीपजी जैन बीना, 427. **इन्दौर (माणक चौक) :** पं. रीतेशजी शास्त्री सनावद, 428. **इन्दौर (न्यू पलासिया) :** पं. गौरवजी शास्त्री चन्देरी, 429. **जबलपुर :** पं. अनिलजी जैन अलमान, 430. **सिवनी :** पं. सतीशचन्दजी जैन पिपरई।

उत्तरप्रदेश प्रान्त में – 431. **बड़ौत :** पं. सुरेशजी काले, 432. **बिलोनी :** पं. मनीषजी शास्त्री खड़ैरी, 433. **गंगेरु :** पं. स्वतंत्र जैन, 434. **झांसी :** पं. नवीनजी अहमदाबाद, 435. **जैतपुरकलां :** पं. भरतजी अलगोंडर, 436. **कानपुर (कराची) :** पं. अनुपम जैन अमायन, 437. **काशीपुर :** पं. नवीन जैन बरा, 438. **मेरठ :** पं. सुबोधजी सिंघई, 439. **मुजफ्फरनगर :** पं. विनोजी गुना, 440. **रसूलपुर :** पं. रवि जैन खनियांधाना, 441. **रानीपुर :** पं. सुदर्शनजी जैन बीना, 442. **शेरकोट :** पं. प्रदीपजी धामपुर, 443. **बसुंधरा :** पं. आशीष जी जैन बण्ड़ा, 444. **आगरा (ताजगंज) :** पं. दिग्विजयजी अलमान, 445. **हरिद्वार :** पं. ललितकुमारजी बण्डा।

महाराष्ट्र प्रान्त में – 446. **मुंबई(दहीसर) :** पं.मनोजजी जैन जबलपुर, 447. **मुंबइ(भायन्दर) :** पं. अशोकजी शास्त्री राधौगढ, 448. **मोडनी :** पं. शीतलजी शेट्टी, 449. **तामसा :** पं. पद्माकरजी दोडल, 450. **चिखली :** वि. स्नेहलताजी उदापुरकर, 451. **विहीगांव :** पं. संजयकुमारजी महाजन, 452. **रामटेक :** पं. संतोष सावजी शास्त्री, 453. **औरंगाबाद :** पं. विशालजी कान्हेड, 454. **ढ़ासाला :** पं. जगदीशजी बेलोकर।

राजस्थान प्रान्त में – 455. **श्री महावीरजी :** पं. संजयजी शास्त्री खनियांधाना, 456. **अजमेर :** पं. निमेशजी शास्त्री, 457. **बूंदी :** पं. भोगीलालजी भदावत, 458. **बिजौलिया :** पं. जगदीशचन्दजी पवांर उज्जैन, 459. **डूंगरपुर :** पं. मोहितजी शास्त्री, 460. **इटावा :** पं. सुनीलजी नाके, 461. **कूण :** पं. अनीलजी शास्त्री, 462. **किशनगढ़ :** पं. जितेन्द्रजी सिंगोड़ी, 463. **अमरकोट :** पं. अजितजी जैन मौ।

जयपुर के विभिन्न उपनगरों में – 464. **टोडरमल स्मारक :** पं. रतनचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त, ब्र. कल्पना बेन, 465. **आदर्शनगर :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त पं. राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ एवं पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री रायपुर, 466. **राजस्थान जैन सभा :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, 467. **मालवीय नगर :** पं. विनयचन्दजी पापड़ीवाल, 468. **जनता कॉलोनी :** पं. प्रवीणजी शास्त्री, 469. **सांगानेर :** पं. चिरंजीलालजी जैन, 470. **मानसरोवर :** पं. गम्भीरमलजी सोनी, 471. **कमला नेहरू नगर :** पं. श्रीपालजी शास्त्री, 472. **दीवान भदीचन्दजी मंदिर :** पं. संतोषजी झांझरी, 473. **तेरापंथियांन बड़ा मंदिर :** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री, 474. **सिवाड़–बाकलीवाल मंदिर :** पं. श्रुतेषजी शास्त्री, 475. **बरकतनगर :** विदुषी प्रेमलताजी, 476. **महावीर नगर :** पं. अमोलजी संघई, 477. **जवाहर नगर :** डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, 478. **जनकपुरी :** पं. शिखरचन्दजी शास्त्री, 479. **मानसरोवर :** पं. जीवनजी शास्त्री, 480. **खजांची की नसियां :** श्री ताराचन्दजी सोगानी, 481. **चित्रकूट कॉलोनी :** श्रीमती अल्काजी सेठी, 482. **झोटवाड़ा :** पं. माणकचन्दजी पहाड़िया, 483. **मानसरोवर मीरा मार्ग :** डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 484. **मुशरफान मंदिर :** श्रीमती प्रभाजी जैन, 485. **प्रतापनगर :** पं. कैलाशचन्दजी मलैया, 486. **चाकसू का चौक :** पं. चिन्मयजी शास्त्री, 487. **महावीर स्कूल (नगर विभाग) :** पं. चिन्मयजी शास्त्री, 488. **महावीर स्कूल (सी–स्कीम) :** पं. जीवनजी शास्त्री, 489. **महावीर पब्लिक स्कूल :** पं. श्रुतेशजी शास्त्री ।

गुजरात प्रान्त में – 490. **अहमदाबाद (पालड़ी) :** पं.विरागजी जैन जबलपुर, 491. **अहमदाबाद (नारायण नगर) :** पं. विजय जी बोरालकर, 492. **अहमदाबार (बापूनगर) :** पं. रमेशजी लवाण, 493. **रखियाल :** पं. मनोजजी करेली, 494. **नरोड़ा :** पं. अंचलप्रकाशजी जैन।

अन्य प्रान्त में – 495. **बेलगांव :** पं.अशोकजी रायपुर, 496. **बेलगांव :** पं. संतोषजी मिंचे, 497. **बेलगांव :** पं. बिहारीजी पाण्डे पोन्नूर, 498. **बेलगांव :** पं. महावीरजी बखेड़ी, 499. **कोलकाता :** पं. देवेन्द्रजी जैन नागपुर, 500. **कोलकाता :** पं. परागजी महाजन, 501. **पुरूलिया :** पं. संजयजी सेठी।

दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में – 502. **नांगलोई :** पं.धर्मेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, 503. **शास्त्री पार्क :** पं. मनोजजी शास्त्री, 504. **पालम कॉलोनी :** पं. संतोषजी बोगार, 505. **गोहाना :** पं. चैतन्यजी सातपुते, 506. **छज्जर :** पं. महावीरजी मांगुलकर, 507. **बहादुरगढ़ :** पं. ज्ञायक जैन, 508. **जनकपुरी :** पं. अनिलजी इंजि.भोपाल, 509. **कैलाशनगर :** पं. पूरनचन्दजी सोनागिर, 510. **दिल्ली :** पं. मनोजजी शास्त्री अभाना, 511. पं. पंकजजी बण्डा, 512. पं. संजयजी इंजि.खनियांधाना ।

समयसार का सार 74

गतांक से आगे

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

इसी कलश का पद्यानुवाद इसप्रकार है –

(हरिगीत)

सूक्ष्म अन्तःसन्धि में अति तीक्ष्ण प्रज्ञाछैनि को।
अति निपुणता से डालकर अति निपुणजन ने बन्ध को।।
अति भिन्न करके आतमा से आतमा में जम गये।
वे ही विवेकी धन्य हैं वे भवजलधि से तर गये।।१८१।।

सूक्ष्म अन्तःसन्धि में बंध और आत्मा के बीच में एक दराज पड़ी है, जो बाहर से दिखाई नहीं देती। उसको बारीकी से देखकर अति तीक्ष्ण अर्थात् बहुत पैनी प्रज्ञाछैनी को निपुणता से डालकर निपुण लोगों ने आत्मा से बंध को जुदा कर दिया।

छहढाला में भी उक्त छैनी को परम पैनी कहा कि –

जिन परमपैनी सुबुधिछैनी डारि अन्तर भेदिया।

बंध और आत्मा का द्विधाकरण करना है। इसमें आत्मा को रखना है और बंध को फेंकना है। जो आत्मा में ही जमेंगे और बंध की तरफ देखेंगे भी नहीं, वे संसार समुद्र से पार होंगे। यही समयसार का निष्कर्ष है जो कि मोक्ष अधिकार में आ गया।

यही एकमात्र धर्म है और करने योग्य कार्य भी यही है, बाकी जो सारा क्रियाकाण्ड है, वह यदि इसके साथ हो तो उसे भी धर्म कह देते हैं।

जिसप्रकार जमाई के साथ यदि नाई भी जाय तो उसे भी मेहमान कह देते हैं; उसीप्रकार आत्मानुभव के साथ होनेवाले बाह्य व्यवहार को भी धर्म कह देते हैं।

उसीप्रकार यह क्रियाकाण्ड इस भेदविज्ञान के साथ ही, इस प्रज्ञाछैनी के साथ ही धर्म कहा जाता है। जो बंध और आत्मा को भिन्न करके आत्मा में जम गए हैं, उनके साथ तो ये भक्ति, पूजा, दान व तीर्थयात्रारूप व्यवहार व्यवहार से धर्म कहे जाते हैं।

टीका में कहा है कि आत्मा और बंध को प्रथम तो उनके नियत स्वलक्षणों के विज्ञान से भिन्न करना चाहिए, तत्पश्चात् रागादिक जिसका लक्षण है – ऐसे समस्त बंध को तो छोड़ना चाहिए तथा उपयोग जिसका लक्षण है, ऐसे शुद्ध आत्मा को ग्रहण करना चाहिए। वास्तव में बंध के त्याग से शुद्ध आत्मा को ग्रहण करना ही आत्मा और बंध के द्विधा करने का प्रयोजन है।

यहाँ बार-बार दोनों को भिन्न जानने के लिए कह रहे हैं; क्योंकि भेदविज्ञान दो पदार्थों के बीच भेद जानने का ही नाम है, अभेद जानने का नाम नहीं है।

जैनधर्म इसका नाम नहीं है कि हम और तुम तो एक ही हैं, तुम जैनी और हम जैनी, तुम मनुष्य और हम मनुष्य, तुम मुमुक्षु और हम मुमुक्षु। भाई ! यह तो परद्रव्य से अभिन्नता की बात है।

हम और तुम जुदे-जुदे हैं। तुम्हारा आत्मा अलग है, हमारा आत्मा अलग है। तुम्हारे असंख्य प्रदेश, अनंत गुण असंख्य प्रदेश और अनंत गुणों से अलग है। तुम्हारा ज्ञान ज्ञान से अलग है। इसप्रकार के चिंतन का नाम भेदविज्ञान जैनधर्म है।

आज दुनिया में एकता के नाम पर यही चल रहा हम और तुम एक हैं।

इसप्रकार बंध और आत्मा को भिन्न-भिन्न जानने प्रज्ञारूपी छैनी ही एकमात्र साधन है।

ये स्पीकर, टेपरिकॉर्डर, किताबें व विद्वान साधन प्रज्ञारूपी छैनी ही साधन है।

कोई कहे हमारे पास तो आत्मकल्याण के बहुत साधन पण्डितजी तो हमारे घर में ही हैं, जब चाहा तब पूछ लि 'जब चाहे' वाले कभी नहीं पूछ पायेंगे। उनका यह लापरवाही को ही बताता है। एकसमय का तो ठिकाना कि कल हम रहेंगे कि नहीं रहेंगे और जब चाहे की बात हैं। अतः प्रज्ञाछैनी ही एकमात्र साधन है।

इस प्रज्ञाछैनी से दोनों के लक्षणों को पहचानना है। का लक्षण जानना-देखना है और बंध का लक्षण पुद्गल रागादिमय है। ऐसा जानकर रागादि से उपयोग को ह अपनी आत्मा में ले जावें और यह माने कि ये ही मैं हूँ मैं नहीं हूँ। यही उपाय है।

इसके लिए ज्यादा तोड़-फोड़ नहीं करना है। भूमिका जो रहे; उसे भेजने की जल्दी मत करना। वह अपने आप पर चला जायेगा। एक बार यह जान लो कि मैं ये नहीं

जरा विचार करो कि अपनी लड़की को देखने के लिए को बुलाया। अब यदि लड़का देखकर हमें पसन्द नहीं और हम घर में बैठकर विचार करें कि उनको मना कैसे

अरे भाई ! मना कैसे करें – यह समस्या नहीं है ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात तो यह निर्णय करना है कि संबंध है कि नहीं? यदि निर्णय कर लिया कि संबंध नहीं करना फिर जबाब कैसे देंगे ? यह कोई समस्या नहीं है।

यह तो बहुत साधारण-सी बात है। यदि निर्णय कर कि संबंध नहीं करना है तो जवाब देने की जरूरत ही न बस थोड़ी अरुचि प्रदर्शित करनी है। इसमें तो जवाब न ही सबसे बढ़िया जवाब है ? वे पूछे कि क्या हुआ ? दो कि सोच रहे हैं, बस हो गया उत्तर।

उसीप्रकार कर्म के लिए कुछ करना नहीं है, ये तो आप चले जायेंगे। तुम तो इतना निर्णय करो कि मैं अ और ये ही मैं हूँ। इतना तुमने किया नहीं कि कर्म अपने नष्ट होने लगेंगे और तुम्हारा मोक्ष हो जायेगा। यही मो मार्ग है।

बाईसवाँ प्रवचन

...समयसार परमागम की चर्चा चल रही है, जिसमें जीवाजीवा- ...से लेकर मोक्ष अधिकार तक की चर्चा हो चुकी है।

...इस अधिकार में इस बात की चर्चा की थी कि न तो ...ज्ञान से मुक्ति होती है और न ही बंधन के चिंतवन से, ...ये दोनों ही विपाक-विचय नामक धर्मध्यान हैं, जो कि ...स्वरूप हैं। इनसे तो पुण्य का बंध होता है, मुक्ति नहीं होती – ऐसा कथन करके यहाँ जो बंध के निरूपक शास्त्रों का ...न करके संतुष्ट हैं – उनकी उत्थापना की है।

...बंधन के ज्ञान और बंधन के चिंतवन से बंधन नहीं कटते; ...बंधन काटने से कटते हैं – ऐसा कहकर भेदविज्ञान की ...आचार्य ने प्रेरित किया है व द्विधाकरण की प्रवृत्ति की ओर ...और कहा है कि बंध और आत्मा को भिन्न-भिन्न जानो। ...बंध और मोक्ष – ये स्वांग हैं और भगवान आत्मा इनसे ...मूलवस्तु है।

...फिर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि ऐसा जानने का साधन ...पास क्या है तो आचार्य कहते हैं कि प्रज्ञाछैनी ही एक ...है और कोई अन्य साधन नहीं है।

...साधन और साध्य अभिन्न होते हैं; किन्तु जो क्रियाकाण्ड ...भगवान आत्मा से भिन्न हैं, अभिन्न नहीं है। मोह-राग-द्वेष ...भी भगवान आत्मा से भिन्न हैं, अभिन्न नहीं। इसलिए ...निश्चय से साधन नहीं हो सकते।

...प्रज्ञा ही भगवान आत्मा से अभिन्न है; अतएव प्रज्ञाछैनी ही ...है और उसी के द्वारा तुम निज आत्मा और बंधादि पदार्थों ...भिन्न जानो।

...फिर प्रश्न हुआ कि हमने यह तो जान लिया, अब जानने ...क्या करें ? इसके उत्तर में कहा गया है कि जानकर ...को छोड़ो और आत्मा को ग्रहण करो।

...ऐसा जानकर जो बंध से विरक्त होते हैं व निज आत्मा को ...करते हैं, वे ही मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

...आत्मा को ग्रहण करने का उपाय क्या है ? इस प्रश्न के ...स्वरूप गाथा कहते हैं –

...सो घिप्पदि अप्पा पण्णाए सो दु घिप्पदे अप्पा।
...पण्णाइ विभत्तो तह पण्णाएव घेत्तव्वो।।२९६।।

...गाथा का सीधा अर्थ है कि जिस प्रज्ञाछैनी से तुमने आत्मा ...बंध को भिन्न-भिन्न किया था, अब उसी प्रज्ञाछैनी से इसे ...करो।

...जैसे कोई लुहार लोहे को संडासी से उठाता है और फिर ...पीटता है। इसीप्रकार डॉक्टर भी ऑपरेशन में छुरी से ...है, कैंची से छीलता है। जिसप्रकार ये लोग हथियार ...रहते हैं।

...उसीप्रकार शिष्य को भी ऐसा लगता है कि हमने प्रज्ञाछैनी ...आत्मा और बंध को विभक्त तो कर लिया, अब ग्रहण करने ...अन्य साधन जुटाना पड़ेगा।

...तब आचार्य कहते हैं कि मुक्ति के मार्ग से प्रारंभ कर मोक्ष प्राप्ति तक एक ही साधन है और वह है प्रज्ञाछैनी। अतः आत्मा को ग्रहण करने के लिए अन्य साधन की आवश्यकता नहीं है।

इसी कथन का पोषक गाथा का पद्यानुवाद इसप्रकार है –

जिस भांति प्रज्ञाछैनी से पर से विभक्त किया इसे।
उस भांति प्रज्ञाछैनी से ही अरे ग्रहण करो इसे।।२९६।।

कोई कहे कि ज्ञान से ग्रहण करे व श्रद्धान और चारित्र से और ध्यान से कर्म काटें; फिर उपवासादि करके निर्जरा करें। उनसे कहते हैं कि इसप्रकार भिन्न-भिन्न साधन जुटाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

कहने का आशय यह है कि एक मात्र ज्ञान ही साधन है और कोई दूसरा साधन तीन लोक और तीनकाल में किसीप्रकार भी सम्भव नहीं है। मोक्ष में पहुँचने तक एक प्रज्ञा ही साधन है।

कोई यह प्रश्न करे कि हमने बंध और आत्मा को भिन्न-भिन्न जान लिया, किन्तु जानने और ग्रहण करने में क्या अंतर है ? जब प्रज्ञा से ही दोनों को विभक्त करना है व प्रज्ञा से ही ग्रहण करना है तो यह तो एक ही प्रक्रिया है।

दोनों में बहुत अंतर है, क्योंकि जानने में तो बंध और आत्मा – ये दोनों ही ज्ञान के ज्ञेय बन रहे थे, किन्तु ग्रहण करने में बंध ज्ञान का ज्ञेय नहीं बनता है, जबकि भगवान आत्मा को ही निरन्तर ज्ञान का ज्ञेय बनाकर उपयोग को वहीं स्थिर करने का नाम ग्रहण करना है।

ऐसा नहीं है कि श्रद्धा में अपनापन स्थापित करना, उसका नाम ग्रहण है; क्योंकि जब ज्ञानगुण ये पक्का निर्णय कर लेगा कि ये ही मैं हूँ और ये मैं नहीं हूँ, तब पर से उपयोग हटाकर उसको ही अपने ज्ञान का ज्ञेय बनायेगा, तब उसी का नाम ध्यान हो जायेगा, तब श्रद्धा गुण भी उसी में अपनापन स्थापित कर लेगा। इसका नाम ही सम्यग्दर्शन है। यही त्रयात्मक मुक्ति का मार्ग है, ऐसा अपने आप सहज सिद्ध हो जायेगा।

तब कोई प्रश्न करे कि मात्र जानते रहें और कुछ नहीं करें; इसपर आचार्य कहते हैं कि इस भेदविज्ञान की भावना को तुम तेजी से नचाओ।

जिसप्रकार कुम्हार के चके को कुम्हार नचाता है तो वह पूरी ताकत से, तेजी से नचाता है और फिर वह हाथ छोड़ भी देता है, तब भी वह तेजी से नाचता है। जितनी देर तक वह नाचता रहता है, उतनी देर में वह उसके ऊपर घड़ा बनाने का अपना काम कर लेता है।

आचार्य कहते हैं कि उसीप्रकार भेदविज्ञान की भावना को तुम तेजी से नचाओ। जैसा कि निम्नांकित गाथाओं में नचाया गया है –

इस भांति प्रज्ञा ग्रहे कि मैं हूँ वही जो चेतता।
अवशेष जो हैं भाव वे मेरे नहीं यह जानना।।२९७।।
इस भांति प्रज्ञा ग्रहे कि मैं हूँ वही जो देखता।
अवशेष जो हैं भाव वे मेरे नहीं यह जानना।।२९८।।
इस भांति प्रज्ञा ग्रहे कि मैं हूँ वही जो जानता।
अवशेष जो हैं भाव वे मेरे नहीं यह जानना।।२९९।।

(क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

विभिन्न अवसरों पर प्राप्त सहयोग राशि

1. श्री नानकचन्दजी जैन, गोपालपुरा बाईपास जयपुर ने पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों से प्रभावित होकर वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिका को 5000/-रुपये की राशि सहायतार्थ प्रदान की है।

2. सरदारशहर निवासी श्री सुबोधजी सेठिया की सुपुत्री सौ. गुंजन जैन का शुभ विवाह डूंगरगढ़ निवासी श्री शांतिलालजी पुंगलिया के सुपुत्र चि. अमित जैन के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग विज्ञान को कुल 1500/- रुपये प्राप्त हुये ।

3. सागर निवासी पण्डित निर्मलकुमारजी सिंघई के सुपुत्र चि. नवीन जैन का विवाह सौ.कां. सपना जैन के साथ सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आपके द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 202/- रुपये प्रदान किये गये।

4. थनावद (कोटा) निवासी श्री कपूरचन्दजी जैन के सुपुत्र चि. मनोज जैन का विवाह सौ.कां. रूबी जैन के साथ सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक समिति को 151/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

5. चि.परीश संग सौ.कां. वन्दना के विवाहोपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक समिति को 101/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

6. कायमगंज निवासी श्रीमती प्रभारानी धर्मपत्नी श्री प्रमोदशरणजी जैन के पौत्र चि. ऋषभ जैन के जन्मोपरान्त प्रथम बार देवदर्शन के उपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक समिति को 251/-रुपये प्राप्त हुये हैं ।

सभी दान दाताओं को जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान (मासिक) की ओर से धन्यवाद ज्ञापित करते हुये हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसीतरह आपका सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा।

पण्डित प्रकाश हितैषी शास्त्री को श्रद्धांजलि

श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् की कार्यकारिणी समिति की बैठक शुक्रवार, दिनांक 15 अगस्त, 2003 को मंगलधाम, बापूनगर, जयपुर में वयोवृद्ध विद्वान् पं. श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ, जयपुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। डॉ. प्रेमचन्द रांवका, जयपुर द्वारा मंगलाचरणोपरान्त डॉ. सत्यप्रकाश जैन महामंत्री ने विद्वत्परिषद् के सन्माननीय अध्यक्ष स्व. पं. श्री प्रकाश हितैषी शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए दि. 7 जून, 2003 को उनके शान्ति एवं समाधिपूर्वक देहत्याग पर शोक संवेदना एवं श्रद्धांजलि अर्पित की। तदुपरान्त सभी सदस्यों ने नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण कर दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं निःश्रेयस पद की प्राप्ति हेतु कामना की।

वैराग्य समाचार

1. मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति सर्वश्री श्रीमंत सेठ डालचन्दजी जैन (पूर्व सांसद) के अनुज श्रीमंत सेठ शिखरचन्दजी जैन का दिनांक 13 अगस्त, 2003 को धार्मिक परिणामोंपूर्वक निधन हो गया है।

शिखरचन्दजी जैन अत्यन्त दयालु, परोपकारी, धार्मिक प्रवृत्ति के साथ-साथ असहाय व्यक्तियों को सहायता प्रदान करनेवाले थे। उनके निधन से निश्चित ही अपूरणीय क्षति हुई है।

आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1002/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

2. बडोदरा निवासी श्री मनुभाई पानाचंद कामदार का 22 जुलाई, 03 को 98 वर्ष की उम्र में शांतभावपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। पूज्य गुरूदेवश्री के साथ आपका प्रथम समागम 1954 में सोनगढ़ में हुआ था। तभी से निरन्तर गुरूदेवश्री के देहविलय तक आप उनके संपर्क में रहे। साथ ही पंचकल्याणक आदि प्रतिष्ठा महोत्सवों में भी आपका सक्रीय सहयोग रहता था।

3. श्रीमती शान्तीदेवी संघी धर्मपत्नी श्री नानकराम संघी चोमू वालों की पुण्यस्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को 402/- रुपये प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

4. बारां निवासी कस्तूरचन्दजी गंगवाल के स्वर्गवास के अवसर पर आपके परिवार की ओर से 51/- रुपये वीतराग-विज्ञान को प्राप्त हुये हैं; एतदर्थ धन्यवाद !

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों -यही भावना है।

- प्रबन्ध सम्पादक

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) सितम्बर (प्रथम) 2003
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127